हॉलीवुड में सफलता का गणित

1950 के दशक में शायद हॉलीवुड का सुनहरा भविष्य समाप्त हो सकता था लेकिन हिट फिल्मों के चलते आज हॉलीवुड की चकाचौंध बढ़ती ही जा रही है। इन फिल्मों की सफलता का राज एक गणितीय अवधारणा है।

फिल्म निर्माता शॉट्स को अच्छे से अच्छा बनाने लगे हैं, जिससे शॉट्स की लंबाई हमें बांधे रखती है। यह कहना है कॉर्नेल यूनिवर्सिटी में मनोवैज्ञानिक जेम्स कटिंग का। उन्होंने करीब 150 हॉलीवुड फिल्मों का विश्लेषण करके पाया कि फिल्म जितनी नई होगी, उसके शॉट्स की लंबाई एक गणितीय पैटर्न पर चलती है। यह पैटर्न मनुष्यों की एकाग्रता के पैटर्न से भी मेल खाता है।

टेक्सास विश्वविद्यालय की एक टीम ने 1990 के दशक में एक अध्ययन किया था। इस अध्ययन में उन्होंने कुछ वालंटियर्स के एकाग्रता पैटर्न का आकलन किया था। लगातार किए गए परीक्षणों के नतीजों का विश्लेषण करने पर देखा गया कि थोड़े-थोड़े समय बाद एकाग्रता की एक लंबी अवधि आती है। अर्थात एकाग्रता का एक पैटर्न होता है। ऐसा ही पैटर्न कई और घटनाओं में भी देखा गया है; जैसे संगीत और हवा में पैदा होने वाले भंवर में।

इसके बाद यह देखने की कोशिश की गई कि क्या हॉलीवुड की फिल्में इस पैटर्न का पालन करती हैं। इसके लिए 1935 से 2005 के बीच रिलीज़ हुई 150 सफल हॉलीवुड फिल्मों को देखा गया। पाया गया कि पहले की बनिस्बत हाल की फिल्मों में यह पैटर्न ज़्यादा नज़र आता है। उन्होंने यह भी देखा कि सिर्फ फास्ट एक्शन फिल्मों में ही यह पैटर्न नज़र नहीं आता। मुख्य बात तो यह है कि थोड़े-थोड़े समय के निश्चित अंतराल पर ऐसे लंबे शॉट्स रखे जाएं।

इस पैटर्न पर बनाई गई फिल्में ज़्यादा सफल होती हैं क्योंकि यह पैटर्न मनुष्य के पैटर्न से मेल खाता है। वैसे यह नहीं कहा जा सकता कि क्या फिल्म निर्माता जान-बूझकर इस पैटर्न का उपयोग फिल्म बनाने में करते हैं। मगर उन्हें लगता है कि फिल्म का इस पैटर्न में संपादित होना उसे सफलता की ओर ले जा सकता है, और यह पैटर्न दूसरे निर्माताओं को भी नकल करने को प्रोत्साहित करेगा।

अलबत्ता शॉट की पेसिंग ही सब कुछ नहीं होती है, और एक सफल फिल्म के लिए शॉट्स का पैटर्न ही काफी नहीं है, अच्छा लेखन और एक्टिंग भी महत्त्वपूर्ण होती है।

हाल ही में एडिनबरा विश्वविद्यालय के टिम स्मिथ ने एकाग्रता सिद्धांत के आधार पर काम करके फिल्म देखते समय आंखों के मूवमेंट को ट्रैक किया तो पाया कि आजकल की फिल्मों के संपादन का पैटर्न ऐसा है कि देखते समय अधिकतर लोगों का ध्यान स्क्रीन पर एक ही स्थान पर होता है। वैसे इस सारे शोध का यह मतलब नहीं है कि मात्र शॉट्स की लंबाई ठीक रहने से फिल्म चल जाएगी। मुख्य चीज़ कथानक ही होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***